

इंदिरा एकादशी कथा in Hindi

एकादशी व्रत को भगवान विष्णु से जोड़ कर देखा जाता है। पौराणिक कथा के अनुसार, सतयुग में महिष्मती नगर में इंद्रसेन नामक एक राजा थे। एक बार, उन्हें एक सपना आया जिसमें उनके माता-पिता अपनी मृत्यु के बाद कष्ट भोग रहे थे। जब राजा की नींद खुली, तो वे अपने पूर्वजों की दयनीय स्थिति को लेकर बहुत चिंतित हुए।

उन्होंने इस मामले पर चर्चा करने के लिए विद्वानों, ब्राह्मणों और मंत्रियों को बुलाया। विद्वानों ने उन्हें सलाह दी कि उन्हें अपनी पत्नी के साथ इंदिरा एकादशी व्रत का पालन करना चाहिए, जिसके पुण्य से उनके पूर्वजों को मुक्ति मिल सकती है। तब राजा ने भगवान शालिग्राम की पूजा की, अपने पितरों का वंदन किया और गरीबों और जरूरतमंदों को दान दिया। उसके बाद, भगवान उनके सामने प्रकट हुए और कहा, "हे राजन, आपके व्रत के प्रभाव से आपके पितरों को मोक्ष की प्राप्ति हुई है।"

Indira Ekadashi Vrat Katha in English

The Ekadashi fast is traditionally associated with Lord Vishnu. According to a legend, in the Satya Yuga, there was a king named Indrasen who ruled over the city of Mahishmati. One night, he had a dream in which he saw his parents suffering after their death. Upon waking, the king was deeply troubled by the pitiable state of his ancestors.

To seek guidance, he called upon scholars, Brahmins, and ministers to discuss this matter. The wise men advised him that he should observe the Indira Ekadashi fast along with his wife, as the merits of this fast could free his ancestors from their suffering. The king then worshiped Lord Shaligram, paid respects to his ancestors, and donated generously to the poor and needy.

Afterward, Lord Vishnu appeared before him and said, "O King, because of the power of your fast, your ancestors have attained liberation."